क्रान्ति का सिद्धान्त व अभ्यास

अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की सेंट्रल कमिटी के पत्र, *जेरी इ पॉपुलिट*, का सम्पादकीय लेख 7 जुलाई 1977

नार्मन बेश्यून इंस्टिट्यूट टॉरॉन्टो, 1977

वेब संस्करण: रेवोल्यूशनरी डेमॉक्रेसी

www.revolutionarydemocracy.org/hindi

प्रकाशन की सूचना

इस प्रकाशन में सम्पादकीय–लेख ''क्रान्ति का सिद्धांत व अभ्यास'' का पूरा मूल पाठ है, जो 7 जुलाई, 1977 को, अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की सेंट्रल कमिटी के पत्र, जेरी इ पॉपुलिट में छापा गया था।

नॉर्मन बेथ्यून इंस्टिट्यूट इस संपादकीय लेख को छाप रहा है, क्योंकि यह अंतर्राष्ट्रीय मार्क्सवादी–लेनिनवादी कम्युनिस्ट आन्दोलन का एक बहुत ही जरूरी लेख है। यह सभी मौकापरस्ती व संशोधनवादी विकृतियों के खिलाफ, अंतर्राष्ट्रीय हालत पर ठीक मार्क्सवादी–लेनिनवादी लाइन की सुरक्षा व हिमायत करता है।

क्रांति का सिद्धान्त व अभ्यास

अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की सेंट्रल कमिटी के पत्र जेरी इ पॉपुलिएट का सम्पादकीय लेख जुलाई 7, 1977।

वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्थिति और इसमें आगे बढ़ती हुई क्रान्तिकारी कार्रवाईयों की जांच करते हुए, साथी अनवर होजा ने अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की 7वीं कांग्रेस में एलान कियाः ''दुनिया ऐसी स्थिति में है, जबकि क्रान्ति और लोगों की राष्ट्रीय आजादी का उद्देश्य सिर्फ एक जजवात और भविष्य की उम्मीद नहीं है, बल्कि हल करने के लिए उठाया गया सवाल है।'' (अनवर होजा, अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की 7वीं कांग्रेस की रिपोर्ट, पृष्ठ 159)*

यह जरूरी सैद्धांतिक बयान साम्राज्यवाद की लेनिनवादी जांच पर, और लेनिन द्वारा की गयी वर्तमान–ऐतिहासिक जमाने के सार की व्याख्या पर आधारित है। यह सर्वहारा के, अपने आप को व सारी मानवता को, इंसान द्वारा इंसान के शोषण से, और पूंजीवादी प्रणाली से मुक्त करने के ऐतिहासिक कर्तव्य से प्रोत्साहित है। यह हमारे समय के मुख्य प्रतिवादों की वास्तविक मार्क्सवादी–लेनिनवादी जांच के अनुसार है। पार्टी की 7वीं कांग्रेस का बयान वर्तमान हालातों में क्रान्ति की मार्क्सवादी–लेनिनवादी नीति को फिर से साबित करता है।

1

साम्राज्यवाद पर उनके प्रतिभावान लेखों में वी.आई. लेनिन ने यह निर्णय किया कि साम्राज्यवाद ढलता व सड़ता हुआ पूंजीवाद है, पूंजीवाद की आखिरी दशा है, और सर्वहारा की सामाजिक क्रान्ति का पूर्ववर्ती हालात है। साम्राज्यवाद की विशेषता प्रकट करने वाले विषयों की जांच करते हुए, उन्होंने लिखाः ''ये सारे कारण पूंजीवादी प्रगति की वर्तमान स्थिति को सर्वहारा–समाजवादी 'क्रान्ति के जमाने में बदल देते हैं'' कि ''उस जमाने का उदय हुआ है'', और ''समाजवादी–क्रान्ति के सार व सारांश होने वाले आर्थिक व राजनीतिक साधनों को पूरा करने के लिये सर्वहारा की राजनीतिक सत्ता–दखल की तैयारी को वास्तविक हालातों ने आज का अत्यावश्यक कार्य बना दिया है।'' (वी.आई. लेनिन, कलेक्टेड वर्क्स, वोल्यूम 24, पृष्ठ 469–470)**

वर्तमान जमाने की व्याख्या करते हुए, लेनिन वर्ग–विशेषता की दृष्टि से आगे बढ़े। उन्होंने कहा कि हमें याद रखना चाहिए कि ''किसी भी वक्त पर, नियत व वास्तविक हालातों में, ऐतिहासिक कार्रवाई का वास्तविक सार क्या है; और ऐसा करना चाहिए यह समझने के लिए कि सबसे पहले किस वर्ग का आन्दोलन उन वास्तविक हालातों में सम्भव होने वाली उन्नति के लिये सबसे प्रमुख है।'' (वी.आई. लेनिन, कलेक्टेड वर्क्स, वोल्यूम 21, पृष्ठ 143) नये ऐतिहासिक जमाने के मूल सार को साम्राज्यवाद व सर्वहारा–क्रान्ति का जमाना बताते हुए, वे हमेशा सर्वहारा के ऐतिहासिक कर्तव्य के बारे में मार्क्स की शिक्षाओं के प्रति वफादार रहे, कि यही वह नयी सामाजिक शक्ति है, जो अत्याचार व शोषण के पूंजीवादी समाज का क्रान्तिकारी विनाश करेगी और नया समाज, वर्गहीन कम्युनिस्ट समाज बनायेगी।

मार्क्स व एंगेल्स के ''दी कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो'' और उनकी ललकार कि ''दुनिया के मजदूरों, एक हो जाओ!'' ने घोषित किया कि अब मानव समाज का मूल प्रतिवाद मेहनत व पूंजी के बीच का प्रतिवाद है, और सर्वहारा को क्रान्ति से इसका समाधान करना पड़ेगा। लेनिन ने अपनी सम्राज्यवाद की जांच से दिखाया कि पूंजीवादी समाज के प्रतिवाद अपनी चरम सीमा तक पहुंच गये हैं और दुनिया सर्वहारा क्रान्ति व समाजवाद की विजय के युग में आ गयी है।

अक्टूबर की महान समाजवादी क्रान्ति ने मार्क्स व लेनिन के प्रतिभावान निर्णयों को अभ्यास में सिद्ध कर दिया। लेनिन की मौत के बाद भी, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन वर्तमान जमाने के बारे में उनकी शिक्षाओं पर व उनकी क्रान्तिकारी नीति पर बड़ी दृढ़ता से डटा रहा। कई दूसरे देशों में समाजवादी क्रान्ति की विजय ने यह सिद्ध किया कि वर्तमान जमाने, यानी पूंजीवाद से समाजवादी परिवर्तन के जमाने पर लेनिनवादी विचार आधुनिक मानव समाज की प्रगति के मूल नियम को प्रकट करता है। उपनिवेशवादी प्रणाली का सत्यानाश, और एशिया, अफ्रीका आदि के अत्यधिक देशों की राजनीतिक स्वाधीनता की जीत भी जमाने व क्रान्ति पर लेनिनवादी सिद्धांत का एक और सबूत है। सोवियत यूनियन व कई दूसरे पुराने समाजवादी देशों में मार्क्सवाद–लेनिनवाद

व क्रान्ति की शिक्षाओं की गद्दारी वर्तमान जमाने की विशेषता पर लेनिनवादी विचार को बिलकुल नहीं बदलती है। क्योंकि यह दुनिया भर में पूंजीवाद पर समाजवाद की अनिवार्य विजय के रास्ते में वक्राकार के अलावा और कुछ नहीं है।

अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर ने हमेशा दृढ़ता से इन मार्क्सवादी–लेनिनवादी निर्णयों की रक्षा की है। साथी अनवर होजा ने कहा हैः ''हमारे जमाने यानी पूंजीवाद से समाजवादी परिवर्तन, और दो विरोधी समाज–प्रणालियों के बीच संघर्ष के जमाने, सर्वहारा व राष्ट्रीय आजादी की क्रान्ति और सम्राज्यवाद के ध्वंस व उपनिवेशवादी प्रणाली के नाश जमाने, दुनिया भर में समाजवाद व कम्युनिज्म की विजय के जमाने के मूल स्वरूप हर रोज और भी ज्यादा उच्चारित व स्पष्ट रूप से सुव्यक्त हो रहे हैं।'' (अनवर होजा, अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की 5वीं कांग्रेस की रिपोर्ट, पृष्ठ 5, अल्बेनियन एडिशन)

मार्क्सवादी–लेनिनवादियों ने हमेशा वर्तमान जमाने व अपनी क्रान्तिकारी नीति की व्याख्या को इस जमाने की विशेषता प्रकट करने वाले मुख्य सामाजिक प्रतिवादों की जांच पर आधारित किया है। इस जमाने की विशेषता प्रकट करने वाले प्रतिवाद कौन–कौन से हैं? रूस में समाजवादी क्रान्ति के बाद लेनिन व स्टालिन ने चार ऐसे प्रतिवादों की बात कीः दोनों विरोधी प्रणालियों–समाजवादी व पूंजीवादी–के बीच प्रतिवाद; पूंजीवादी देशों में मेहनत व पूंजी के बीच प्रतिवाद; पीड़ित लोगों व देशों और साम्राज्यवाद के बीच प्रतिवाद; यही प्रतिवाद वर्तमान क्रान्तिकारी आन्दोलनों की प्रगति के वास्तविक आधार हैं, और यही प्रतिवाद, अपनी सम्पूर्णता में, हमारे जमाने की विश्व –क्रान्ति की महान कार्रवाई है। सारी वर्तमान विश्व–प्रति साबित करती है कि लेनिन के समय के बाद, ये प्रतिवाद कम नहीं हो गये, या हट नहीं गये, बल्कि ज्यादा तेज और पहले से ज्यादा स्पष्ट रूप से सुव्यक्त हो गये हैं। इसलिये, इन प्रतिवादों के मौजूद होने की पहचान व स्वीकृति उचित क्रान्तिकारी नीति की व्याख्या के आधार हैं।

लेकिन इन प्रतिवादों के मौजूद होने की असलियत को इनका करना, इनको छुपाना, किसी एक या दूसरे प्रतिवार को स्वीकार न करना, इनके असली सार को विकृत करना, जैसे कि विभिन्न संशोधनवादी व मौकापरस्त कर रहे हैं, क्रान्तिकारी आन्दोलन में गोलमाल और गलत अनुस्थापन पैदा करते हु और विकृत, ढोंगी–क्रान्तिकारी नीति व युक्ति बनाने व इनकी सिफारिश करने के आधार बन जाते हैं।

2

इस समय, नाम–मात्र की ''पहली'',''दूसरी'', व ''तीसरी'' दुनियाओं में दुनिया के विभाजन की, और ''श्रेणीबद्ध न होने वाली दुनिया'', ''बढ़ते हुए देशों की दुनिया, ''उत्तर – दक्षिण'' दुनिया, आदि की बहुत सारी बातें चल रही हैं। इन विभाजनों का हरेक पक्षपोषक अपने ''सिद्धान्त को सबसे ठीक नीति के रूप में पेश करता है, जो, वह बहस करता है, वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के वास्तविक हालातों के अनुकूल है। लेकिन, जैसे कि साथी अनवर होजा ने, 7वीं कांग्रेस में जबरदस्त एलान किया हैः ''ये सारे नाम, जो दुनिया में काम करने वाली विभिन्न राजनीतिक शक्तियों के नाम हैं, असलियत में छुपाने वाले नाम हैं, और स्पष्ट नहीं समझाते कि इन राजनीतिक शक्तियों का वर्ग स्वभाव क्या है, हमारे जमाने के मूल अंतर्विरोध कौन से हैं, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय तौर पर कौन से मुख्य सवाल सबसे बड़ा है, कि एक ओर, सरमायदारी–संशोधनवादी दुनिया और दूसरी और समाजवाद, दुनिया के सर्वहारा और उनके स्वाभाविक सहायकी, इन दोनों के बीच कैसा बेरहम संघर्ष चल रहा है।'' (अनवर होजा, अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की 7वीं कांग्रेस की रिपोर्ट, पृष्ठ 172–173)

जब माक्सवादी–लेनिनवादी दुनिया व विभिन्न देशों की बात करते हैं, और उनका वर्गीकरण करते हैं, तो उनका निर्णय डायनेक्टिकल व हिस्टोरिकल–मटीरियलिज्म के सिद्धान्तों के अनुसार होता है। वो सबसे पहले, विभिन्न देशों की सामाजिक आर्थिक प्रणाली से निर्णय करते हैं। बिलकुल इसी दृष्टि से देखते हुये, 1921 में, जब सोवियत रूस ही दुनिया में एकमात्र समाजवादी देश था, वी.आई. लेनिन ने लिखाः ''अब दो दुनियाएं हैंः पूंजीवाद की पुरानी दुनिया, जो गड़बड़ की स्थिति में है, लेकिन जो कभी अपनी इच्छा से हार नहीं मानेगी, और जागती हुई नयी दुनिया, जो अभी भी बहुत कमजोर है, लेकिन जिसकी वृद्धि हेागी, क्योंकि यह अपराजेय है।'' (वी.आई. लेनिन, कलेक्टेड वर्क्स, वोल्यूम 33, पृष्ठ 150) अपनी ओर से जे.वी. स्टालिन ने भी, 1919 में छापे गये, अपने प्रसिद्ध लेख, ''दी टू कैम्पस'' में जबरदस्त एलान कियाः – ''दुनिया बड़े निश्चयात्मक व अपरिवर्तनीय रूप से दो

छावनियों में विभाजित कर दी गयी हैः साम्राज्यवाद की छावनी और समाजवाद की छावनी....। इन दोनों छावनियों के बीच संघर्ष वर्तमान मामलों का सबसे मुख्य विषय है, और पुरानी व नयी दुनियाओं के नेताओं वर्तमान घरेलू व विदेशी नीतियों का सम्पूर्ण सार निश्चित करता है।'' (जे.वी. स्टॉलिन, वर्क्स, वोल्यूम 4, पृष्ठ 240)***

हमारी पार्टी की राय है कि आज भी, हमें समाजवादी दुनिया की बात करनी चाहिए, जैसे लेनिन व सटॉलिन ने की थी, कि लेनिनवादी कसौटी हमेशा ठीक है, जैसे कि लेनिनवाद भी अत्यावश्यक व ठीक है। ''तीन दुनियाएं'', ''श्रेणीबद्ध न होने वाली दुनिया'' आदि के सिद्धांतकारों– जिन्होंने अपनी योजनाओं से समाजवाद की विद्यमानता को मिटा दिया है और जो सोवियत यूनियन व कई दूसरे पुराने समाजवादी देशों में पूंजीवाद की पुनर्स्थापन, यानी समाजवादी छावनी के विच्छेद की बात करते हैं– इनके तर्क बिलकुल बेबुनियादी हैं। वो लेनिनवादी शिक्षाओं व वर्ग कसौटी के बिलकुल विरुद्ध हैं।

संशोधनवादी गद्दारी, सोवियत यूनियन व कई पुराने समाजवादी देशों में पूंजीवाद का लौट आना, अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट व मजदूर आन्दोलनों में व्यापक तौर पर आधुनिक संशोधनवाद का फैलाव और इस आन्दोलन का विच्छेद क्रान्ति व समाजवाद के उद्देश्य पर एक भारी प्रहार था। लेकिन इसका मतलब यह बिलकुल नहीं है कि समाजवादी प्रणाली खत्म कर दी गयी है, और दुनिया को दो विरोधी प्रणालियों में विभाजित करने की कसौटी को बदल देना चाहिये, कि अब समाजवाद व पूंजीवाद के बीच प्रतिवाद मौजूद नहीं है। समाजवाद जिंदा है और मार्क्सवाद–लेनिनवाद के प्रति बफादार रहने वाले, सच्चे समाजवादी देशों में आगे बढ़ रहा है जैसे कि लोगों के समाजवादी गणतांत्रिक अल्बेनिया में। इसलिये, समाजवादी प्रणाली, जो कि पूंजीवादी प्रणाली के खिलाफ है, वास्तव में जिंदा है, जैसे कि उसके व पूंजीवाद के बीच प्रतिवाद और जीवन–मृत्यु के बीच जिंदा है।

समाजवाद की सामाजिक प्रणाली को अस्वीकार करते हुए, यह नाम मात्र का ''तीन दुनियाओं का सिद्धान्त'' सर्वहारा की महान ऐतिहासिक विजय, और समाजवाद व पूंजीवाद के बीच इस वक्त के मूल प्रतिवाद को अस्वीकार करता है। यह स्पष्ट है कि ऐसा सिद्धान्त जो कि समाजवाद को अस्वीकार करता है, गैर–लेनिनवादी है; कि वह समाजवादी निर्णाण किये जाने वाले देशों में सर्वहारा के अधिनायकत्व को कमजोर बनाता है और दुनिया के सर्वहारा को न लड़ने और समाजवादी क्रान्ति में जाग्रत न होने का बुलावा देता है। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं हैः हालत की जांच करने में सर्वहारा वर्ग–विशेषता से हट जाने पर क्रान्ति व सर्वहारा के हित के खिलाफ नतीजे ही निकल सकते हैं।

अपने लेखों में, महान व दृढ़ मार्क्सवादी, लेनिन ने काफी बार पूंजीवादी दुनिया और उसमें होने वाली शक्तियों के रिश्तों की जांच की। उन्होंने क्रान्ति का निर्माण करने और विश्व–सर्वहारा, कम्युनिस्ट पार्टियों व प्रथम समाजवादी देश के कार्यों की व्याख्या करने के लिये ही ऐसा किया, व यह दिखाने के लिये भी, कि क्रान्ति के सच्चे मित्र कौन हैं, और दुश्मन कौन।

लेनिन, 1920 की कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की दूसरी कांग्रेस में, अपने थीसिस व रिपोर्ट में, इस विषय की एक प्रतिभावान मिसाल पेश करते हैं। ''क्रान्तिकारी पार्टियों को अब अभ्यास से 'सिद्ध' करना पड़ेगा'', लेनिन ने जबरदस्ती से कहा, ''कि सफल व विजयी–क्रान्ति के लिये उनमें काफी समझदारी व संगठन है, शोषित जनता के साथ संपर्क है, और इस संकट का प्रयोग करने की दुढ़ता व योग्यता है''

''खासतौर पर, इस 'सबूत' को तैयार करने के लिए ही हम कम्युनिस्ट–इंटरनेशनल की इस कांग्रेस में इकट्ठे हुए हैं।'' (वी.आई. लेनिन, कलेक्टेड वर्क्स वोल्यूम 31, पृष्ठ 227)

लेकिन ''तीन दुनियाओं'' का यह नाम मात्र का सिद्धांत क्रांति के लिए कोई कार्य नहीं पेश करता है, बल्कि वह इसे भूल जाता है। ''तीन दुनियाओं'' की योजना में सर्वहारा व सरमायदारों के बीच मूल प्रतिवाद नहीं है। दुनिया के इस विभाजन में दिखाई देने वाली, दूसरी चीज है इस ''सिद्धान्त'' के मुताबिक इस दुनिया में गिने जाने वाले देशों, वहां पर अधिकार जमाये हुए शासकों, और वहां काम करने वाली विभिन्न राजनीतिक शक्तियों को वह एक ही सत्व समझता है। वह पीड़ित लोगों और उनके देशों की प्रतिक्रियावादी व साम्राज्यवादी पक्षी शक्तियों के बीच के प्रतिवाद को अस्वीकार करता है।

सभी जानते हैं कि साम्राज्यवाद द्वारा शोषित देशों में और एशिया, अफ्रीका व लैटन अमरीका के देशों में स्वाधीनता प्रेमी लोग मुक्ति, आजादी, व राष्ट्रीय राज–सत्ता के लिए पुराने व नये उपनिवेशवाद के खिलाफ

सख्त संघर्ष लड़ रहे हैं। यह एक मुनासिब व क्रान्तिकारी स्वाधीनता संघर्ष है, जिसे सच्चे समाजवादी देशों के मार्क्सवादी लेनिनवादियों का विश्व सर्वहारा का और सभी प्रगतिशील शक्तियों का निस्संकोची सहयोग मिलता है। यह संघर्ष निश्चित रूप से कई दुश्मनों के खिलाफ निर्दिष्ट हैः साम्राज्यवादी अत्याचारियों, और सबसे पहले, सबसे बड़े शोषण व अंतर्राष्ट्रीय सिपाही और दुनिया के लोगों के सबसे खतरनाक दुश्मन दोनों सुपर पॉवरों के खिलाफ; स्थानीय प्रतिक्रियावादी सरमायदारों के खिलाफ, जो विदेशी साम्राज्यवादियों, किसी न किसी सुपर पॉवर, और अंतर्राष्ट्रीय एकाधिकारियों के साथ हजारों बंधनों से जुड़े हुए हैं, और जो राष्ट्रीय मुक्ति व आजादी के दुश्मन हैं; अभी भी स्पष्ट दिखायी देने वाले, सामन्तवाद के बचे भागों के खिलाफ, जो विदेशी साम्राज्यवादियों पर निर्भर करते हैं, और जन क्रान्ति के खिलाफ प्रतिक्रियावादी सरमायदारों के साथ जुड़े हुए हैं; प्रतिक्रियावादी व तानाशाही शासकों के खिलाफ जो इन तीनों दुश्मनों के अधिपत्य के प्रतिनिधि व सुरक्षक हैं।

इसलिए, ढोंग करना पागलपन है कि हमें सिर्फ बाहरी साम्राज्यवादी दुश्मनों के खिलाफ ही लड़ना चाहिए, और साथ साथ, घरेलू दुश्मनों, साम्राज्यवाद के मित्रों व सहकारियों, और इस संघर्ष को रोकने वाले सभी कारणों के खिलाफ लड़ाई व हमला नहीं करना चाहिए। धरेलू दुश्मनों, प्रतिक्रियावादियों व गद्दारों, बिकाऊ बेराष्ट्रवादी लोगों के बिना आज तक कोई भी स्वाधीनता संघर्ष या राष्ट्रीय लोकतांत्रिक व बे–साम्राज्यवादी क्रान्ति नहीं हो पायी है। विदेश–निर्भरी सरमायदारों को गिनते हुए, सरमायदारों की सभी श्रेणियों को बे–साम्राज्यवादी शक्ति और साम्राज्यवाद के खिलाफ निर्दिष्ट किये संघर्ष को आगे बढ़ाने वाले आधार व कारण नहीं समझा जा सकता है जैसे कि ''तीन दुनियाओं'' का नाम मात्र का सिद्धांत करता है। इस ''सिद्धांत'' का अनुसरण करने का मतलब है क्रान्तिकारी आन्दोलन को ठीक रास्ते से विचलित करना, क्रान्ति को आधे रास्ते पर छोड़ देना इसे दूसरे देशों की सर्वहारा क्रान्ति से अलग करना, और उन देशों के लोगों व सर्वहारा के संघर्ष को बे–मार्क्सवादी व संशोधनवादी रास्ते पर चालू कर देना।

मार्क्सवाद–लेनिनवाद हमें सिखाता है कि राष्ट्रीय सवाल को हमेशा क्रान्ति के उद्देश्य का सहकारी समझना चाहिए। इस दृष्टिकोंण से मार्क्सवादी लेनिनवादी उन सारे आन्दोलनों को सहयोग देते हैं, जिनका प्रभाव साम्राज्यवाद के खिलाफ निर्दिष्ट है, और जो विश्व सर्वहारा क्रान्ति के आम उद्देश्य की सेवा में हैं। ''हम कम्युनिस्टों की'' लेनिन ने जोरदार एलान किया, ''उपनिवेशों के सरमायदारी–आजादी आंदोलनों की सहायता तभी करनी चाहिए और हम तभी करेंगे, जबकि ये सच्ची क्रान्तिकारी हों, और जब इनके व्याख्यातागण किसानों व शोषित जनता की क्रान्तिकारी भावना में शिक्षा व संगठन के हमारे कार्यों में रुकावट न डालें। अगर ये हालात मौजूद न हों, तो इन देशों के कम्युनिस्टों को सुधारवादी सरमायदारों जिनमें दूसरे इंटरनेशनल के नायम भी हैं– का मुकाबला करना चाहिए।'' (वी.आई. लेनिन, कलेक्टेड वर्क्स, वोल्यूम 31, पृष्ठ 242)

लेकिन ''तीन दुनियाओं'' के विचार की सिफारिश करने वाले स्वाधीनता आन्दोलन की ''साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष की मुख्य शक्ति''भी कहते हैं, और इस आन्दोलन में सऊदी अरेबिया के राजा व शाह ऑफ इरान के अमरीकी तेल एकाधिकारियों के साथ सौदा, या बिलियन डॉलर के उनके पेंटागन के साथ हथियारों की लेन–देन को भी गिनते हैं। इस तर्क के मुताबिक, जो तेल के शेख न्यूयॉर्क शहर के बॉल स्ट्रीट के बैंकों में अपने तेल का पैसा जमा करते हैं, वो साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ रहे हैं और साम्राज्यवादी अधिकार के प्रति निर्दिष्ट लोगों के संघर्ष के सहायक हैं, और अमरीकी साम्राज्यवादी जो इन शेखों के प्रतिक्रियावादी, अत्याचारी शासनों को हथियार बेचते हैं वो 'देश प्रेमी शक्तियों को ये हथियार दे रहे हैं, जो अरेबिया व परशिया के 'सुनहले रेतों' से साम्राज्यवादियों को ढकेल देने के लिए लड़ रहे हैं।

घटनायें साबित करती हैं कि आज लोकतांत्रिक व बे साम्राज्यवादी क्रान्ति तभी दृढ़ता से लड़ी व पूरी की जा सकती है, जब इसका नेता सर्वहारा हो, जो पार्टी के नेतृत्व में हो, और किसानों व दूसरी बे–साम्राज्यवादी, देशप्रेमी शक्तियों की व्यापक जनता से जुड़ी हुई हो। 1905 में ही लेनिन ने अपने ''टू टैक्टिक्स'' नामक किताब में गम्भीर तर्कों से सिद्ध किया कि साम्राज्यवाद के हालातों में लोकतांत्रिक सरमायदारी क्रान्तियों की विशेषता इन क्रान्तियों को आगे बढ़ाने वाली सबसे इच्छुक शक्ति सरमायदार नहीं है, जो अस्थिर है और जिसमें जनता की क्रान्तिकारी उत्तेजना के खिलाफ, प्रतिक्रियावादी सामंतवादी शक्तियों से एकता बनाने की प्रवृत्ति है, बल्कि यह शक्ति सर्वहारा वर्ग है, जो लोकतांत्रिक सरमायदारी क्रान्ति को समाजवादी क्रान्ति तक पहुंचाने के रास्ते में एक बीच की स्थिति समझता है। और हमारे समय के राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलनों के बारे में भी यही कहना

पड़ेगा। जे.वी. स्टॉलिन ने इस बात पर जोर दिया, कि अक्टूबर की क्रान्ति के बाद; ''उपनिवेशों व निर्भरी देशों में स्वाधीनता की क्रान्ति का जमाना, उन देशों में सर्वहारा की जागृति का जमाना, क्रान्ति में उसके अधिपत्य का जमाना शुरू हो गया है।'' (जे.वीत्र स्टॉलिन, वर्क्स, वोल्यूम 10, पृष्ठ 250)

वर्तमान हालातों में इन लेनिनवादी शिक्षाओं की खास कीमत व आवश्यकता है। आज दुनिया में दो प्रवृत्तियां पैदा हुई हैं, और बड़ी शक्ति से काम कर रही हैं; इन प्रवृत्तियों की ओर लेनिन ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है: एक ओर, पूंजीवादी सत्ताधिकारियों द्वारा राष्ट्रीय सीमाओं के नाश और आर्थिक व राजनीतिक जिन्दगी के अंतर्राष्ट्रीकरण की प्रवृत्ति;दूसरी ओर विभिन्न देशों द्वारा राष्ट्रीय आजादी के संघर्ष की मजबूती की प्रवृत्ति। इस तरह, पहली प्रवृत्ति के सम्बन्ध में उपनिवेशवाद से मुक्त बहुत सारे देशों में स्थानीय सरमायदारों के विदेशी साम्राज्यवादी पूंजी के साथ बंधन सिर्फ जारी ही नहीं रखे गये, बल्कि अनेक नये उपनिवेशवादी स्वरूपों में मजबूत व विस्तृत किये जा रहे हैं, जैसे कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों विभिन्न आर्थिक रुपये संबंधी समावेश, इत्यादि। यह सरमायदार, जिसका इन देशों की आर्थिक व राजनीतिक जिंदगी में प्रमुख स्थान है और जो बढ़ रहा है, एक साम्राज्यवादी पक्षी शक्ति है और क्रान्ति व स्वाधीनता आन्दोलन का दुश्मन है।

दूसरी प्रवृत्ति यानी पुराने उपनिवेशवादी देशों में साम्राज्यवाद के खिलाफ, राष्ट्रीय आजादी की मजबूती, सबसे पहले और खासतौर पर इन देशों में सर्वहारा की वृद्धि से जुड़ी हुई है। इस तरह वे साम्राज्यवादी व लोकतांत्रिक क्रान्तियों की व्यापक और लगातार प्रगति के लिये सर्वहारा के उनको नेतृत्व देने के लिये और फलस्वरूप उनके ऊंचे स्तर के समाजवादी संघर्ष में बदल जाने के लिये ज्यादा से ज्यादा अच्छे हालात पैदा किये जा रहे हैं।

मार्क्सवादी लेनिनवादी लोग इस नाम मात्र की ''तीसरी दुनिया'' के देशों के लोगों व सर्वहारा के तीव्र स्वाधीनताकारी क्रान्तिकारी व समाजवादी जजबातों, और इन देशों के अत्याचारी, विदेश–निर्भरी–सरमायदारों के लक्ष्यों व नीतियों में गड़बड़ नहीं फैलाते हैं। वो जानते हैं कि ऐशिया, अफ्रीका व लैटिन अमरीका के देशों के लोगों में दृढ़ प्रगतिशील धरायें हैं, जो अवश्य ही अपने क्रान्तिकारी संघर्ष को विजयी कर ठहरायेगी।

लेकिन कई बढ़ते हुये देशों की सच्ची वे साम्राज्यवादी व क्रान्तिकारी शक्तियों और सत्ता करने वाली साम्राज्यवादी–पक्षी, प्रतिक्रियावादी व तानाशाही शक्तियों के बीच कोई भेद नहीं करते हुए, आमतौर पर, इस नाम मात्र की 'तीसरी दुनिया' को साम्राज्यवाद के खिलाफ, व क्रान्ति के संघर्ष की मुख्य शक्ति कहलाने जैसे कि 'तीन दुनियाओं के सिद्धान्त के सहायक कर रहे हैं– का मतलब है मार्क्सवाद–लेनिनवाद की शिक्षाओं को बड़े निंदित रूप से बिदा देना और क्रान्तिकारी शक्तियों के बीच गड़बड़ व बे–संगठन फैलाने वाले स्वाभाविक मौकापरस्ती विचारों का प्रचार करना। इसका सार यह है कि 'तीन दुनियाओं' के सिद्धांत के मुताबिक, ब्राजील में गीजल व चिली में पिनोरोट, इन्डोनेशिया में सुहार्तो, इरान के शह, जॉर्डन के राजा आदि के खूनी तानाशाही अधिनाकयत्वों के खिलाफ नहीं लड़ना चाहिए क्योंकि उनके बहस के अनुसार वो उस ''क्रान्तिकारी प्रेरक शक्ति'' के भाग हैं, जो ''दुनिया के इतिहास के चक्र को आगे चला रही है''। बल्कि, इस सिद्धांत के मुताबिक, लोगों व क्रान्तिकारियों को 'तीसरी दुनिया' की प्रतिक्रियावादी शक्तियों व शासकों के साथ एकत्रित हो जाना चाहिए औ उनको सहयोग देना चाहिए, यानी क्रान्ति को छोड़ देना चाहिए।

अमरीकी साम्राज्यवाद दूसरे पूंजीवादी राज्य व सोवियत सामाजिक साम्राज्यवाद ने इस नाम मात्र की 'तीसरी दुनिया' के देशों में सत्ता करने वाले वर्गों को अपने साथ हजारों बन्धनों के द्वारा बांध रखा है। विदेशी एकाधिकारियों पर निर्भर करते हुये और अपनी व्यापक जनता पर अपने अधिकार को जारी रखने की इच्छा करते हुए ये वर्ग अवश्य ही यह दिखाना चाहते हैं कि वो एक लोकतांत्रिक व आजाद देशों के दल हैं, जो अमरीकी साम्राज्यवाद व सोवियत सामाजिक साम्राज्यवाद पर दबाव डालना चाहते हैं और अपनी घरेलू बातों में उनके दखल की रोकना चाहते हैं।

लेनिन ने कम्युनिस्ट पार्टियों की बड़ी जबरदस्ती से 'सभी देशों की सबसे व्यापक मेहनती जनता के बीच साम्राज्यवादी शक्तियों–जो राजनीतिक रूप से आजाद राज्यों के वेश में, अपने ऊपर आर्थिक रूपये संबंधी व सैनिक रूप से पूरी तरह निर्भरी राज्य बनाते हैं–द्वारा व्यवस्थित रूप से की गयी दगाबाजी को समझाने व इनका पर्दाफाश करने की निरंतर जरूरत के बारे में सिखाया। (लेनिन, कलेक्टेड वर्क्स, वोल्यूम 31, पृष्ठ 150)

अल्बेनिया की पार्टी आफ हमेशा लेनिन की इन अमर शिक्षाओं के साथ बड़ी बफादारी से खड़ी रही है।

'उसी तरह, विभिन्न राज्यों और सरकारों की राजनीतियों की जांच पड़ताल करते समय साथी अनवर होजा ने अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की 7वीं कांग्रेस में एलान किया, 'मार्क्सवादी लोग साम्राज्यवाद और समाजवाद के प्रति, अपने लोगों और प्रतिक्रिया के प्रति इन सरकारी और देशों के विचार को वर्ग विशेषता की दृष्टि से देखते हैं।

इन शिक्षाओं के आधार पर क्रान्तिकारी आंदोलन और सर्वहारा अपनी नीतियों व युक्तियां बनाते हैं, साम्राज्यवाद, सरमायदारों व प्रतिक्रिया के खिलाफ संघर्ष में अपने सहायकों को ढूंढकर, उनके एकता बनाते हैं। तीसरी दुनिया किसी से भी श्रेणीबद्ध न होने वाली दुनिया या बढ़ते हुए देश– ऐसे नाम, राष्ट्रीय और सामाजिक आजादी के लिये लड़ने वाले विस्तृत लोगों में यह वहम पैदा करते हैं कि सुपरपावरों की धमकी के तूफान से आसरा देने वाला एक सहरा मिल गया है। ये नाम इन में से ज्यादातर देशों की असली स्थिति को छुपाते हैं जेा किसी न किसी तरह राजनीतिक वैचारिक और आर्थिक रूप से दोनों सुपरपावरों व पुराने उपनिवेशवादी महानगरों से जुड़े हुये हैं, और उन पर निर्भर करते हैं। (अनवर होजा, अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की 7वीं कांग्रेस की रिपोर्ट, पृष्ठ 173–174)

नाम मात्र की तीसरी दुनिया ''श्रेणीबद्ध न होने वाले देश'' आदि के वर्तमान सिद्धांत क्रान्ति को रोकने व पूंजीवाद की हिफाजत करने के उद्देश्य वाले सिद्धांत हैं। पूंजीवाद को अपना अधिकार जमाने से रोकना नहीं चाहिये, बल्कि उसे से किस्म का अधिकार जमाना चाहिये, जो लोगों के लिये और थोड़ा रुचिर हो। नाम के भेद के बावजूद, ये नाम मात्र की 'तीसरी दुनिया और 'श्रेणीबद्ध न होने वाली दुनिया पानी के दो बूंदों के समान, बिलकुल एक जैसे हैं एक ही नीति व विचारधारा इन दोनों का पथ–प्रदर्शक है। एक दल दूसरे से ऐसे जुड़ा हुआ है, कि यह कहना मुश्किल है कि 'तीसरी दुनिया के कौन से देश हैं, और वो श्रेणीबद्ध न होने वालों से कैसे अलग हैं, और श्रेणीबद्ध न होने वाले देश कौन से हैं, व तीसरी दुनिया से वो कैसे अलग हैं।

नाम मात्र के 'बढ़ते हुए देशों' का एक और दल बनाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं, जिसमें तीसरी दुनिया के और श्रेणीबद्ध न होने वाले देशों को मिला कर रखा गया है। इस सिद्धांत के लेखक भी वर्ग प्रतिवादों को छुपा रहे हैं, पूर्व स्थिति की सिफारिश कर रहे हैं, कह रहे हैं कि साम्राज्यवाद सामाजिक साम्राज्यवाद व दूसरी साम्रज्यवादी शक्तियों को क्रोधित करने वाला कोई काम नहीं करना चाहिए, अगर वो 'बढ़ते हुये देशों' की आर्थिकता बनाने के लिये कुछ 'भीख' देते रहे। इस सिद्धांत के लेखकों के अनुसार बड़ी शक्तियों को थोड़ी सी 'कुर्बानियां' करनी चाहिये, भूखे लोगों को कुछ देना चाहिये, ताकि वो किसी तरह से जीवन बिता सकेंगे, और अपना सिर नहीं उठायेंगे। वो कहते हैं कि इस तरह एक बीच का रास्ता मिलेगा, 'एक नयी अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली' स्थापित की जायगी। जिसमें सभी अमीर व गरीब, शोषक व शोषित, युद्ध के बिना', हथियारों के बिना, एकता में, वर्ग शान्ति में, सहजीवन बितायेंगे, जैसे कि क्रुश्चेव ने कहा था।

बिलकुल इसीलिये कि इन तीनों 'आविष्कारों' के सार व उद्देश्य एक ही हैं, यह दिखायी देता है कि 'श्रेणीबद्ध न होने वाले देशों', तीसरी दुनिया, व 'बढ़ते हुये देशों की दुनिया' के नेतृत्व बिलकुल मिले हुये हैं। एक साथ मिलकर वो, अपने सिद्धांतों व उपदेशों द्वारा, जनता, सर्वहारा व लोगों को धोखा दे रहे हैं, ताकि उनको क्रान्तिकारी संघर्ष से विचलित कर दिया जाय।

''तीन दुनियाओं'' का सिद्धांत दोनों विरोधी सामाजिक प्रणालियों समाजवाद व पूंजीवाद–के बीच के प्रतिवाद को ही सिर्फ अस्वीकार नहीं करता है, बल्कि वह पीड़ित लोगों व विश्व साम्राज्यवाद के बीच नहीं करता है। वह इसे दोनों सुपर पॉवरों के साथ प्रतिवाद कहलाता है, और खासतौर पर सिर्फ एक के साथ ही। यह सिद्धांत पीड़ित लोगों व देशी और दूसरी साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच प्रतिवाद को बिलकुल अस्वीकार करता है। इससे भी बड़ी बात यह है कि तीन दुनियाओं के सिद्धांत पक्षपाती इन साम्राज्यवादी देशों व अमरीकी साम्राज्यवाद के साथ सोवियत सामाजिक साम्राज्यवादियों के खिलाफ, तीसरी दुनिया के देशों की एकता का बुलावा देते हैं।

दुनिया के तीन दुनियाओं में विभाजन की सच सिद्ध करने के लिये एक तर्क यह है कि वर्तमान समय पर, दूसरे महायुद्ध के बाद होने वाली साम्राज्यवादी छावनी जिसमें अमरीकी साम्राज्यवाद का अविभाजित अधिकार था। विभिन्न साम्राज्यवादियों की असमान प्रगति के कारण टूट गयी है और खत्म हो गयी है। इस सिद्धान्त के सहायक दावा करते हैं कि आज एकमात्र साम्राज्यवादी दुनिया की बात की जा सकती है क्योंकि एक ओर पश्चिम

के साम्राज्यवादी अमरीकी शासकों के खिलाफ उठ खड़े हुए हैं और दूसरी ओर, दोनों साम्राज्यवादी सुपर पॉवर– यू एस ए व सोवियत यूनियन के बीच एक भयंकर व चिरस्थायी दुश्मनी मौजूद है।

साम्राज्यवाद की स्थिति में विभिन्न पूंजीवादी देशों में असमान प्रगति के कारण अंतर साम्राज्यवादी प्रतिवाद मौजूद होते हैं व हमेशा गहरे होते चले जाते हैं अंतर साम्राज्यवादी एकताएं, दल व संगठन हालातों व अंदाजों पर बनाये व तोड़े जाते हैं। यह मार्क्सवाद लेनिनवाद का पहला पाठ है। लेनिन ने साम्राज्यवाद की इस स्वाभाविक धटना का काफी सबूत दिया, जो दिखाता है कि पूंजीवाद की आखिरी स्थिति, साम्राज्यवाद, अविलम्बित रूप से पतन की ओर बढ़ रही है, कि यह एक वास्तविक नियम है; लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि इन प्रतिवादों के कारण, साम्राज्यवादी दुनिया की सामाजिक प्रणाली खत्म हो गयी है, और यह विभिन्न दुनियाओं में विभाजित हो गयी है, कि एक या दूसरे साम्राज्यवाद की सामाजिक आर्थिक प्रकृति बदल गयी है? बिलकुल नहीं, वर्तमान घटनायें साम्राज्यवादी दुनिया का विच्छेद नहीं प्रकट करती है बल्कि एकमात्र विश्व साम्राज्यवादी प्रणाली में प्रदर्शित करती है, जिसकी विशेषता अब दो बड़े साम्राज्यवादी दलों की उपस्थित हैः एक ओर अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में पश्चिमी साम्राज्यवादी दल जिसके साधन नेटो, यूरोपियन कौमन मार्केट आदि जैसे अंतर साम्राज्यवादी संगठन हैं और दूसरी ओर सोवियत सामाजिक साम्राज्यवाद के अधिकार में पूर्वी दल जिसकी विस्तारवादी सरदारवादी व युद्ध व्यापारी नीति के साधन वॉसों ट्रीटी व कौमे कौन हैं।

''तीन दुनियाओं की योजना में, नाम मात्र की दूसरी दुनिया में पूंजीवादी व संशोधनवादी साम्राज्यवादी देश हैं, जो सामाजिक प्रणाली की दृष्टि से दोनों सुपरपॉवरों या तीसरी दुनिया के विभिन्न देशों से किसी मूल विषय में अलग नहीं हैं। यह सच है कि इस दुनिया के देशों और दोनों सुपर पॉवरों के बीच विशेष प्रतिवाद लेकिन ये अंतर साम्राज्यवादी प्रकृति के प्रतिवाद है, जैसे कि दोनों सुपर पॉवरों के बीच के प्रतिवाद भी हैं। सबसे पहले ये बाजारों प्रभाव के क्षेत्रों पूंजी के निर्यात व दूसरों के धन के शोषण के सथानों पर प्रतिवाद हैं, और ये पश्चिम जर्मनी जापानी, अंग्रेजी, फ्रंसीसी, कैनेडियन, आदि साम्राज्यवादियों के एक या दूसरे सुपर पॉवर के साथ और एक दूसरे के बीच प्रतिवाद हैं।

ये प्रतिवाद अवश्य ही विश्व साम्राज्यवादी प्रणाली को कमजोर बनाते हैं ओर सर्वहारा व लोगों के संघर्ष के हित में हैं। लेकिन विभिनन साम्राज्यवादी शक्तियों व दोनों सुपरपॉवरों के बीच प्रतिवाद को साम्राज्यवाद के खिलाफ उनके नाश के लिए मजदूर लोगों व जनता के संघर्ष के समान समझना वे मार्क्सवादी है।

ऐसा कभी नहीं हो सकता है कि नाम मात्रा की दूसरी दुनिया के देश यानि वहां पर सत्ता करने वाले बड़े एकाधिकारी सरमायदार दोनों सुपरपावरों व विश्व साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष में पीड़ित लोगों व देशों के मित्र बन जायेंगे। दूसरे महायुद्ध के बाद से इतिहास ने साफ दिखाया है कि ये देश कोरिया, वियतनाम, मिडल ईस्ट, अफ्रीका आदि में अमरीकी साम्राज्यवाद की लड़ाकी नीति व कार्यों को सहयोग देते रहे हैं और अभी भी देते हैं। वो नये उपनिवेशवाद और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक रिश्तों में असमानता की पुरानी प्रणाली में उत्साही सुरक्षक हैं। दूसरी दुनिया में सोवियत सामाजिक साम्राज्यवाद के मित्र उसके साथ मिलकर चेकोस्लावकिया के दखल करने में भाग लिये थे, और अब वो दुनिया के विभिन्न भागों में उसकी लूटने व विस्तार करने की नीति के जोशीले सहायक हैं। नाम मात्र की दूसरी दुनिया के देश दोनों सुपर पॉवरों के लड़ाके व विस्तार करने वाले संगठनों के मुख्य आर्थिक व सैनिक सहयोगी हैं।

तीन दुनियाओं के सिद्धान्त के सहायक दावा करते हैं कि इसमें अंतर साम्राज्यवादी प्रतिवादों के प्रयोग करने की बड़ी संभावनायें हैं। दुश्मन की दावनी के प्रतिवादों का प्रयोग किया जाना चाहिए लेकिन किस ढंग से व किस उद्देश्य के लिए? ठीक सिद्धान्त यह है कि उनका प्रयोग हमेशा क्रान्ति के हित के लिये लोगों व उनकी मुक्ति के हित के लिये होना चाहिये। ठीक सिद्धांत है कि दुश्मनों के बीच प्रतिवादों के प्रयोग से क्रान्तिकारी व स्वाधीनता आन्दोलन की प्रबलता व मजबूती बननी चाहिए इसकी कमजोरी व मौत नहीं और लोगों के बीच दुश्मनों के बारे में किसी भी किस्म के बहम पैदा न होने देते हुये दुश्मनों और खास कर मुख्य दुश्मनों के खिलाफ संघर्ष में क्रान्तिकारी शक्तियों का पहले से ज्यादा क्रियाशील संचालन होना चाहिये।

अंतर साम्राज्यवादी प्रतिवादों को संपूर्ण समझना और क्रानित व गैर क्रान्ति के बीच के मूल प्रतिवाद का अल्पानुमान करना दुश्मनी छावनी के प्रतिवादों के प्रयोग को ही सिफ नीति के बीच में रखना और मुख्य बात यानी मजदूरों व लोगों की क्रान्तिकारी भावना की वृद्धि और क्रान्तिकारी आन्दोलन की प्रगति को भूल जाना,

क्रान्ति की तैयारी की ओर ध्यान न देना ये मार्क्सवाद लेनिनवाद की शिखाओं के बिलकुल खिलाफ हैं। प्रतिवादों के प्रयोग के टोंग करते हुए बलवान साम्रज्यवाद का विरोध करने के लिए कमजोर साम्राज्यवादों के साथ एकता का प्रचार करना और किसी दूसरे देश के सरमायदारों का विरोध करने के लिये किसी एक देश के सरमायदारों का एक साथ देना वे मार्क्सवादी है। लेनिन ने इस बात पर जोर दिया है कि दुश्मनों के बीच प्रतिवादों के प्रयोग की युक्ति को सर्वहारा वर्ग चेतना, क्रान्तिकारी भावना और लड़ने व जीतने की योग्यता बढ़ाने के काम में लाना चाहिये, घटाने के काम में नहीं। (लेनिन, कलेक्टेड वर्क्स, वोल्यूम 31, पृष्ठ 78)

अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर ने हमेशा दृढ़ता से इन अमर लेनिनवादी शिक्षाओं की हिफाजत की है ओर करती है। ''साम्राज्यवाद व आधुनिक संशोधनवाद के मुख्य संकटों के इन वक्तों पर हमें उनके खिलाफ अपने संघर्ष के प्रवल बनाना चाहिए, अपने हित में और समाजवादी देशों व क्रान्ति में जागृत होने वाले लोगों के हित में, अपने दुश्मनों के बीच मुख्य प्रतिवादों का ठीक प्रयोग करना चाहिये, इन प्रतिवादों का पर्दाफाश करता रहना चाहिये और साम्रज्यवादियों व संशोधनवादियों द्वारा अनिच्छा से बहस किये गये उनके विचारों के संयम व रियायतों से संतुष्ट नहीं रहना चाहिये जब तक न खतरा दूर हो जाय और बाद में बदला लिया जाय।

इसलिये हमें हमेशा सतर्क रहना चाहिये ओर उन पर अपना प्रहार जारी रखना चाहिये।'' (अनवर होजा हमारे देश में तकनीकी वैज्ञानिक क्रान्ति की ओर भी प्रगति करो, भाषण 1971–72, (टिराना, 8 ननटोरी पब्लिशिंग हाउस, 1974) पृष्ठ 66–67)।

नाम मात्र की दूसरी दुनिया, जिसमें ज्यादातर पूंजीवादी व नये उपनिवेशवादी देश हैं, और जो अमरीकी साम्राज्यवाद व सोवियत सामाजिक साम्राज्यवाद के खिलाफ ढोंगी संधर्ष में तीसरी दुनिया के मित्रों के रूप में दोनों सुपर पॉवरों के मुख्य सहायक है को पेश करते हुए तीन दुनियाओं के सिद्धांत का बे–क्रान्तिकारी व ढोंगी बे–साम्राज्यवादी स्वभाव बड़ा स्पष्ट हो जाता है।

यह एक बे–क्रान्तिकारी सिद्धांत है, क्योंकि यह यूरोप, जापान, कैनेडा आदि के सर्वहारा, जिसे दूसरी दुनिया के देशों के एकाधिकारों सरमायदार व शोषण प्रणाली के खिलाफ लड़ना पड़ेगा, के लिए सामाजिक शान्ति सरमायदारों के साथ सहकार्य यानी क्रान्ति को त्याग देने का प्रचार करता है, क्योंकि यह बहस करता है कि राष्ट्रीय आजादी की सुरक्षा के हित के लिये और खास कर सोवियत सामाजिक साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष के लिये इसकी जरूरत है।

यह एक टोंगी, बे–साम्राज्यवादी सिद्धान्त है, क्योंकि यह दूसरी दुनिया की साम्राज्यवादी शक्तियों की नयी उपनिवेशवादी व शोषक नीति को उचित साबित करता है और इसको सहयोग देता है और एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमरीका के लोगों को इस नीति का विरोध न करने का बुलावा देता है, जो नीति वह बहस करता है, सुपरपॉवरों के खिलाफ संघर्ष के लिये है। असलियत में इस तरह नाम मात्र की तीसरी दुनिया व दूसरी दुनिया के लोगों के बे–साम्राज्यवादी, बे–सामाजिक साम्राज्यवादी संघर्ष कमजोर व नष्ट किये जाते हैं

3

क्रान्तिकारी नीति वह है, जो क्रान्ति को बीच में रखती है। लेनिनवाद की नीति व युक्ति , सटॉलिन ने लिखा है सर्वहारा के वर्ग संघर्ष के नेतृत्व का विज्ञान है। (जे.वी.स्टालिन, वर्क्स, वोल्यूम 6, पृष्ठ 155)

लेनिनवादी नीति समझती है कि विश्व सर्वहारा क्रान्ति एकमात्र कार्रवाई है, जो हमारे जमाने के बहुत सारे महान क्रान्तिकारी रुखों से बनी हुयी है, ओर जिसके बीच में अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा खड़ा है।

दो राहों, समाजवाद व पूंजीवाद के बीच भयंकर व कट्टर संघर्ष द्वारा सच्चे समाजवाद के रास्ते पर बढ़ते हुए देशों में, समाजवाद की पूंजीवाद पर संपूर्ण व आखिरी विजय निश्चित करने औश्र गैर क्रान्तिकारी हिंसा, साम्राज्यवादी हमला या शान्तिपूर्वक सरमायदारी संशोधनवादी पतन द्वारा वापस जाने के लिये यह निरंतर चल रही है। दुनिया भर की क्रान्तिकारी जनता व लोग सबसे ज्यादा क्रियाशील रुचि के साथ इस संघर्ष को देख रहे हैं। और इसे दुनिया भर की क्रान्ति व समाजवाद के उद्देश्य के लिये एक जरूरी सवाल समझ रहे हैं। वो समाजवादी देशों को साम्राज्यवाद के किसी भी प्रयत्न के खिलाफ अपना पूरा व निस्संकोची सहयोग व सहारा देते है, क्योंकि समाजवादी देशों में वो क्रान्ति का एक मजबूत आधार व केंद्र देखते हैं, और यहां वो उन आदर्शों को अभ्यास में सिद्ध किये हुए देखते हैं जिनके लिये वो अपने आप लड़ रहे हैं। समाजवादी क्रान्ति में विजयी देश के लिये अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा द्वारा मदद व सहयोग की आवश्यकता व सबसे बड़ी जरूरत पर लेनिन के

विचार अमर हैं। लेकिन हमेशा इसका मतलब यह है कि हम एक सच्चे समाजवादी देश के बारे में बात कर रहे हैं, जो पूरी शक्ति से मार्क्सवाद लेनिनवाद की क्रान्तिकारी शिक्षाओं को लागू करता है और हमेशा सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता का साथ देता है। लेकिन अगर यह पूंजीवादी देश में बदल गया है और सिर्फ एक धोखेबाजी ''समाजवादी'' वेश पहनता है तो इसकी मदद नहीं करनी चाहिये।

क्रान्तिकारी लोग व जनता जानती है कि समाजवादी देशों की सफलतायें व संघर्ष साम्राज्यवाद, सरमायदारों, व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया को कमजोर करने वाले प्रहार है, कि वो मजदूरों और लोगों के क्रान्तिकारी व स्वाधीनता संघर्ष के लिये स्पष्ट सहायता व सहारा है।

लेनिन व स्टालिन ने हमेशा समझा था कि एक समाजवादी देश के सर्वहारा का क्रान्तिकारी काम सिर्फ अपने देश में समाजवादी प्रगति का हर प्रयत्न करना ही नहीं है बल्कि हर तरफ से दूसरे देशों में क्रान्तिकारी व स्वाधीनता आंदोलनों को भी सहयोग देना है ''लेनिन ने सोवियत गणतंत्र को कभी भी अपने आप में ही समाप्त नहीं समझा'' स्टॉलिन खिलते हैं ''उन्होंने हमेशा इसे पश्चिम व पूर्व के देशों के क्रान्तिकारी आन्दोलनों की मजबूती का एक जरूरी संयोग और सारी दुनिया के मजदूरों की पूंजीवाद पर विजय को सरल बनाने को जरूरी संयोग समझा था। लेनिन वे जानते थे कि अंतर्राष्ट्रीय तौर पर और सोवियत गणतंत्र को जिंदा रखने के लिये यही एकमात्र ठीक धारणा है।'' (जे.वी. स्टालिन, वर्क्सवोल्यूम 6, पृष्ठ52)

बिलकुल इसीलिये ही एक सच्चा समाजवादी देश अपने आप को नाम मात्र की तीसरी दुनिया या श्रेणीबद्ध न होने वाले देशों, जैसे दलों में नहीं गिन सकता है, जिनमें हर तरह की वर्ग सीमायें मिटा दी गयी हैं और जो लोगों को साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष व क्रान्ति के रास्ते विचलित करने की सेवा में ही हैं।

सिर्फ क्रान्तिकारी स्वाधीनता प्रेमी व प्रगतिशील शक्तियां, मजदूर वर्ग का क्रान्तिकारी आन्दोलन और पीड़ित लोगों व देशों का वे साम्राज्यवादी आन्दोलन ही समाजवादी देशों के सच्चे व निर्भरी मित्र हो सकते हैं। इसलिये तीन दुनियाओं में विभाजन का प्रचार करना, हमारे समय के मूल प्रतिवादों को अस्वीकार करना, सर्वहारा व एकाधिकारी सरमायदारों के बीच और पीड़ित लोगों व नाम मात्र की दूसरी दुनिया की साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच एकता का बुलावा देना अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा लोगों व समाजवादी देशों के लिये लाभदायक नहीं है। यह बे–लेनिनवादी है। जे. स्टॉलिन ने इस बात पर जोर दियाः ''मैं ऐसी स्थिति के कभी भी पैदा होने की कल्पना नहीं कर सकता हूं, जबकि हमारे सोवियत गणतंत्र के हित के लिये हमारी भाईचारे की पार्टियों को रांयपक्षी विचलन करना पड़ेगा... मैं कल्पना नहीं कर सकता कि दुनिया भर के सर्वहारा क्रान्तिकारी आन्दोलन के आधार हमारे गणतंत्र के हित के लिये पश्चिम के मजदूरों की सबसे ज्यादा क्रान्तिकारी भावना व राजनीतिक कार्यों की जरूरत नहीं पड़ेगी, बल्कि उनके कार्यों की दुर्बलता की जरूरत पड़ेगी। '' (जे. वी स्टानिलन, वोल्यूम 8, पृष्ठ 116)

पूंजीवाद के महानगरों में आज विश्व सर्वहारा क्रान्ति की कार्रवाई सवहारा व दूसरी मेहनती और प्रगतिशील श्रेणियों के सरमायदारी अत्याचार व शोषण के खिलाफ विश्व पूंजीवादी प्रणाली के वर्तमान संकट के भार को मेहनती लोगों पर चढ़ाने के सरमायदारों के प्रयत्नों के खिलाफ किसी न किसी तरह तानाशाह के पुनर्जीवन के खिलाफ बढ़ते हुए वर्ग संघर्षों में शामिल है। सर्वहारा के नेतृत्व में मेहनती लोगों की व्यापक जनता के बीच हर रोज यह चेतना बढ़ रही है, कि पूंजीवाद के संकट व दूसरी बुराइयों से सरमायदारी शोषणा, तानाशाही हिंसा, व सम्राज्यवादी युद्ध से बचन का एक मात्र रास्ता समाजवादी क्रान्ति व सर्वहारा के अधिनायकत्व की स्थापना है। जिंदगी व घटनायें साबित करती हैं कि न तो सरमायदार और न ही सामाजिक लोकतांत्रिकों से आधुनिक संशोधनवादियों तक उनके खुले या छद्यवेशी नौकर जनता के क्रान्तिकारी संधर्ष के बढ़ते हुए ज्वार को रोक सकते हैं। दुनिया के सर्वहारा की आजकल की लड़ाई, साथी अनवर होजा ने अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की 7वीं कांग्रेस ने कहा ''से मार्क्सबाद लेनिनवाद का यह मूल सिद्धांत एक बाद फिर से साबित होता है कि सरमायदारी व संशोधनवादी दुनिया में मजदूर वर्ग और उसके क्रान्तिकारी संघर्षों को अत्याचार या बाजारी नेतागिरी द्वारा रोका नहीं जा सकता।'' (अनवर होजा अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लबर की 7वीं कांग्रेस की रिपोर्ट, पृष्ठ 156)

आगे बढ़े हुये पूंजीवादी देशो मं क्रान्ति के वास्तविक हालात और भी अच्छे हो रहे हैं। वहां पर सर्वहारा क्रान्ति अब हल करने के लिये उठाया गया सवाल है। बिलकुल उचित रूप से मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टियां

जिन्होंने संशोधनवादियों द्वारा वंचित व बरखास्त किये गये क्रान्ति के झंडे को उठा लिया है, सरमायदारी प्रणाली को खत्म करने वाली आगे की क्रान्तिकारी लड़ाइयों के लिए सर्वहारा व उसके मित्रों को तैयार करने के कार्यों की जिम्मेदारी ले ली है और गम्भीरता से काम करने लगी हैं। विश्व पूंजीवादी साम्राज्यवादी प्रणाली के मुख्य प्रभावशाली स्थानों पर चोट पहुंचाने वाले इस क्रान्तिकारी संघर्ष को सच्चे समाजवादी देशों व दुनिया भर के सभी क्रान्तिकारी व स्वाधीनता प्रेमी लोगों के पूरे सहयोग का आनन्द मिलता है और मिलना चाहिये। लेकिन आज आधुनिक संशोधनवादी तीन दुनियाओं के सिद्धांत के सहायक, और श्रेणीबद्ध न होने के सिद्धांतकार, क्रान्ति व उसकी तैयारी के बारे में कुछ भी न कहते हुए असलियत में इसे नष्ट करने और पूंजीवादी प्रणाली की पूर्व स्थिति को जिंदा रखने की कोशिश कर रहे हैं।

क्रान्ति से सर्वहारा के ध्यान को विचलित करने के लिये तीन दुनियाओं के सिद्धांत के लेखक प्रचार करते हैं कि इस मसय सुपर पॉवरों, खासकर सोवियत सामाजिक साम्राज्यवाद जिसे वो मुख्य दुश्मन समझते हैं, के हमले के खतरे से राष्ट्रीय आजादी की सुरक्षा का सवाल ही प्रमुख विषय है। किसी भी समय अंतर्राष्ट्रीय तौर पर प्रमुख दुश्मन की व्याख्या करने का सवाल क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिये बहुत जरूरी है। घटनाओं के क्रम और वर्तमान हालत की वर्ग जांच को याद रखकर हमारी पार्टी जबर्दस्त एलान करती है कि अमरीकी साम्राज्यवाद ये दोनों सुपर पॉवर आज ''लोगों के मुख्य और सबसे बड़े दुश्मन हैं'', और इसलिए ''दोनें बिलकुल समान खतरे हैं।'' (अनवर होजा अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की 7वीं कांग्रेस की रिपोर्ट, पृष्ठ 186)

सोवियत सामाजिक साम्राज्यवाद एक खूंखार लड़ाकू साम्राज्यवाद है, जो विस्तार करने का प्यासा है और जो पूंजी व हथियारों की शक्ति पर आधारित एक स्वाभाविक उपनिवेशवादी व नयी उपनिवेशवादी नीति अपना रहा है।

अमरीकी साम्राज्यवाद से दुश्मनी करने वाला यह नया साम्राज्यवाद युद्धावश्यक स्थान प्राप्त करने और सभी प्रदेशों व महाद्वीपों केा पकड़ लेने के लिये छटपटा रहा है। यह क्रान्ति की आग को बुझाने वाला और लोगों के स्वाधीनता संघर्षा को दबाने वाला है। लेकिन इसका मतलब यह बिलकुल नहीं है कि लोगों व सारी दुनिया का दूसरा दुश्मन, अमरीकी साम्राज्यवाद कुछ कम खरतनाक है, जैसे कि ''तीन दुनियाओं'' के सिद्धांत की सिफारिश करने वाले दावा करते हैं। सच्चाई केा विकृत करके, व लोगों को धोखा देकर वो दावा करते हैं कि अमरीकी साम्राज्यवाद अब युद्ध व्यापारी नहीं है, वह कमजोर हो गया है, टल रहा है, कि वह एक ''कायर चूहा'' बन गया है; यानी अमरीकी साम्राज्यवाद शान्तिपूर्ण बन रहा है। बात इतनी दूर तक बढ़ गयी है कि जर्मनी, बेल्जियम, इटली, जापान और विभिन्न दूसरे देशों में अमरीकी सेना की उपस्थिति की सुरक्षा का कारण कहा जा रहा है और इसे मुनासिब सिद्ध किया जा रहा है। ऐसे विचिर लोगों की मुक्ति व क्रान्ति की किस्मत के लिए बड़े खतरनाक हैं। ऐसी बातें अमरीकी साम्राज्यवाद व सोवियत साम्राज्यवाद के लड़ाकू अधिकार जमाने वाले व विस्तार करने के लिए वाले स्वभाव के बारे में वहम पैदा करती है।

सर्वहारा व सर्वहारा क्रान्ति के सामने हरेक साम्राज्यवाद और खासतौर पर दोनों साम्राज्यवादी सुपर पॉवरों को खत्म करने का काम है। कोई भी साम्राज्यवाद अपने स्वभाव से ही हमेशा सर्वहारा क्रान्ति का बेरहम दुश्मन है। इसलिये साम्राज्यवाद को ज्यादा या कम खतरनाक विभागों में बांटना विश्व क्रान्ति को युद्धनैतिक दृष्टि से गलत है। अभ्यास से साबित होता है कि दोनों सुपर पॉवर, बिलकुल समान रूप से समाजवाद व देशों की मुक्ति और आजादी का मुख्य दुश्मन है शोषक प्रणालियों की हिफाजत करने वाली सबसे बड़ी शक्ति है और मानवता को तीसरे महायुद्ध में ढकेल देने वाला सीधा खतरा है। इस बड़ी सच्चाई को न मानना, एक या दूसरे सुपर पॉवर के खतरे का अल्पानुमान करना या इससे भी बुरी बात यानी कि सुपर पॉवर के साथ दूसरे के खिलाफ एकता बनाने का बुलावा देना क्रान्ति व लोगों की मुक्ति के भविष्य के लिये विपत्तिपूर्ण नतीजों व भारी खतरों से भरपूर है।

ऐसा जरूर होता है व हो सकता है कि कोई देश किसी एक सुपर पॉवर द्वारा पीड़ित व सीधे तौर पर सतर्जित है, लेकिन किसी तरह से भी या किसी हालत में भी इसका मतलब यह नहीं है कि दूसरा सुपर पॉवर उसी देश के लिये खतरनाक नहीं है या कि दूसरा सुपर पॉवर उसी देश का मित्र बन गया है। ''मेरे दुश्मन का दुश्मन मेरा मित्र है'' यह सिद्धांत दोनों साम्राज्यवादी सुपर पॉवरों सोवियत यूनियन व यू.एस.ए. के मामलों में लागू नहीं किया जा सकता। ये दोनों सुपरपॉवर हर तरह से क्रान्ति के खिलाफ लड़ रहे हैं और क्रान्ति व समाजवाद

को नष्ट करने और खून में बहा देने की हर कोशिश कर रहे हैं। हमारा अनुभव यह दिखाता है कि लोगों पर अपने खून के प्यासे दबाव को फैलाने के लिये यानी दूसरे की जगह लेने की जबर्दस्त कोशिश करते हुए वो कभी एक और कभी दूसरे प्रदेश पर भयंकर आक्रमण कर रहे हैं। जब भी किसी देश के लोग एक सुपर पॉवर का अधिकार को हटा सकते हैं, तो तभी दूसरा घुस पड़ता है। मिडल ईस्ट व अफ्रीका में इसका काफी सबूत है।

हमारे समय की विश्वक्रान्ति का दूसरा प्रमुख रुख लोगों का राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन है, जो साम्राज्यवाद नया उपनिवेशवाद व उपनिवेशवाद के बचे भागों के खिलाफ केन्द्रित है। मार्क्सवादी लेनिनवादी लोगों के राष्ट्रीय स्वाधीनता आनदोलन के बिलकुल साथ हैं और इसे अपना पूरा सहयोग देते हैं, और इसे विश्व क्रान्तिकारी कार्यवाही की प्रगति में एक बहुत जरूरी, अद्वितीय कारण समझते हैं। राष्ट्रीय मुक्ति व आजादी के लिये लड़ने वाले लागों को सहयोग दिया है। हम दुनिया के सर्वहारा की एकता चाहते हैं और सभी सच्ची बे–साम्राज्यवादी प्रगति चाहने वाली शक्तियों की भी जो अपने संघर्ष द्वारा साम्राज्यवादी युद्ध व्यापारियों की लड़ाई योजना को तोड़ देंगे। अपनी मार्क्सवादी लेनिनवादी राजनीति पर अटल रहती हुई पार्टी आफ लेबर ऑफ अल्बेनिया व अल्बेनिया के लोग दोनों सुपर पॉवरों उनके हिंसक साम्राज्यवादी युद्धों, एकाधिकारी सरमायदारों व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया के खिलाफ हमेशा रहे हैं और अभी भी हैं। इसलिये भविश्य में भी वो सभी दूसरे वे साम्राज्यवाद, बे–सामाजिक–साम्राज्यवादी लोगों, सभी मार्क्सवादी–लेनिनवादी पार्टियों, सभी क्रान्तिकारियों, दुनिया के सर्वहारा और सभी प्रगतिशील लोगों के साथ मिलकर, पूरी ताकत से लड़ेंगे, ताकि दुश्मनों की योजनाएं नष्ट कर दी जायें और लोगों की आजादी और सुदक्षा की जीत हो। हरेक वक्त पर हमारा देश उन लोगों के साथ खड़ा रहेगा। जिनकी मुक्ति और आजादी को धमकी दी गयी है और जिनके अधिकारों का उललंघन किया गया है। (अनवर होजा, अल्बेनिया की पार्टी ऑफ लेबर की 7वीं कांग्रेस की रिपोर्ट, पृष्ठ 196) अल्बेनिया की पार्टी व राज की ओर से साथी अनवर होजा ने लोगों की असेम्बली में, हमारे नये संविधान की स्वीकृति से संबंधी अपने भाषण में भी यह दृढ़ विचार घोषित किया। उन्होंने कहाः आज दुनिया के अधिकतर लोग बड़े प्रयास कर रहे हैं, और उपनिवेशवादी नियमों व नये उपनिवेशवादी अधिकार, सरमायदारों द्वारा लोगों पर अपना शोषण जारी रखने व अंतर्राष्ट्रीय रिश्तों में उनके घृणित विभाजन व भेद–भाव को जारी रखने के लिये स्थापित किये गये पुराने व नये कानून, अभ्यास, रीति रिवाजों व असमान समझौतों का जबरदस्त विरोध कर रहे हैं। जो प्रगतिशील लेाग व लेाकतांत्रिक राज्य इस हालत को स्वीकार नहीं करते, जो अपनी सम्पत्तियों पर राष्ट्रीय सत्ता स्थापित करने के लिये, अपनी राजनीतिक व आर्थिक आजादी को मजबूत करने के लिए और अंतर्राष्ट्रीय रिश्तों में समानता व इन्साफ के लिये संघर्ष करते हैं, उनको अल्बेनिया के लेागों व राज के साथ एकता व पूरे सहयोग का आनन्द मिलता है। ''(अनवर होजा, लोगों की असेम्बली के भाषण, दिसम्बर 27, 1976'', अल्बेनिया टुडे, नं. 1 (32)/77)

लेनिन के समय से शुरू करके माक्सवादी लेनिनवादियों ने हमेशा साम्राज्यवाद द्वारा पीड़ित लोगों व देशों के राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष को विश्व क्रान्ति व सर्वहारा का जबरदस्त मित्र, व महान सम्पत्ति समझा है।

पूरी व आधी राजनीतिक आजादी प्राप्त की हुयी देशों में क्रान्ति प्रगति की विभिन्न हालतों में है और हर जगह इसके सामने समान कार्य नहीं हैं। इनमें से कई देश हैं, जिनके सामने सर्वहारा क्रान्ति का कार्य है और बहुत सारे दूसरे देशों में बे–साम्राज्यवादी राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रान्ति ही अब का कार्य है। लेकिन किसी भी हालत में क्योकि यह क्रान्ति भी अंतर्राष्ट्रीय सरमायदारों साम्राज्यवाद के खिलाफ केंद्रित है यह विश्व सर्वहारा क्रान्ति का मित्र व सपत्ति है।

लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि इन देशों को राष्ट्रीय लोकतांत्रिक हालत में ही रहना चाहिये और क्रान्तिकारियों को समाजवादी क्रान्ति की बात व तैयारी नहीं करनी चाहिए, इस भय से कि कई बीच की हालतें छूट जायेंगी और कोई उन्हें ब्लैंकुइसट बुलायेगा? इन देशों में लोकतांत्रिक क्रान्ति में बदल देने की जरूरत की बात की। ब्लैंकुइज्म की आलोचना करते हुए मार्क्स और एंगेल्स ने 1848 की क्रान्ति को या पैरिस कम्यून को समय पूर्व नहीं कहा। मार्क्सवादी लेनिनवादी लोग छोटी सरमायदारी व्याकुलता जिससे बीच की हालतें छूट जाती हैं और क्रान्ति की निरंतरता प्रगति की मूल जरूरत के बीच गड़बड़ नहीं फैलाते हैं।

लेनिन ने कहा था कि उपनिवेशी व निर्भरी देशों में क्रान्ति को आगे बढ़ाना पड़ेगा। लेनिन के बाद उन देशों में बड़े परिवर्तन हुये हैं। अपनी बुद्धिमत्ता से लेनिन ने पहले ही इन परिवर्तनों के बारे में बताया था और उनका जवाब विश्व क्रान्तिकारी कार्रवाई की लेनिनवादी थीसिस में मिलता है। सर्वहारा क्रान्ति लड़ना एक विश्व व्यापक

कानून है और हमरे जमाने की मुख्य प्रवृत्ति है। सभी देशों इंन्डोशिया, चिली, ब्राजील ओर जैर आदि को भी इसका अनुभव करना पड़ेगा चाहे इस हालत तक पहुंचने के लिये कितनी बीच की हालतों की जरूरत हो। अगर तुम इस उद्देश्य को भूल जाओ, अगर तुम पूर्व स्थिति को जारी रखने का प्रचार करो, और बीच की हालतों के न छूटने के बारे में विचार विमर्श करो, अगर तुम सुहार्टो व व पिनोश्रोट, गीजल व मोबुटु से लड़ना भूल जाओ, तो इसका मतलब यह है कि तुम न तो राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष के लिये हो और न ही राष्ट्रीय लोकतांत्रिक क्रान्ति के लिये।

यूरोप को भी सर्वहारा क्रान्ति का अनुभव करना पड़ेगा। जो कोई भी यह भूल जाता है जो कोई भी इसकी तैयारी नहीं करता है कि क्रान्ति एशिया व अफ्रीका में हट गयी है और यूरोप के सर्वहारा को राष्ट्रीय आजादी की सुरक्षा के लिये अपने ''समझदार व सज्जन सरमायदारों'' के साथ मिल जाना चाहिए उसका बिलकुल बे–लेनिनवादी विचार है, और वह न तो देश की हिफाजत के लिए है न ही राष्ट्र की आजादी के लिये जो कोई भूल जाता है कि वॉरसॉ ट्रीटी व नेटो, दोनों का मुकाबला कना चाहिये। कि मौमेकौन व कॉमन मार्किट दोनों को अस्वीकार करना चाहिए, वह उनका पक्षपाती है और उनका गुलाम बन जाता है।

''मैनिफेस्टो ऑफ दी कम्युनिस्ट पार्टी'' में मार्क्स व एंगेल्स ने लिखाः ''सारे यूरोप पर एक भूत का भय छाया हुआ है, कम्युनिज्म का भूत। इस भूत को उतारने के लिये पुराने यूरोप की सभी शक्तियां पवित्र संगठन में संगठित हो गयी है।'' (मार्क्स व एंगेल्स, मैनिफेस्टो ऑफ दी कम्युनिस्ट पार्टी, पीकिंग, फॉरेन लैंगुएजेज प्रेस, 1975) मार्क्स व एंगेल्स का यह निरीक्षण हमारे समय क लिये भी सच है। संशोधनवादी गद्दारी के कारण क्रान्ति की सामयिक पराजय, और क्रान्तिकारी आन्दोलन व सम्युनिज्म के विचारों का विरोध करने के लिये साम्राज्यवाद व सामाजिक साम्रज्यवाद की आर्थिक शक्ति व अत्याचारी सैनिक शक्ति इतिहास के क्रम की बदलने या मार्क्सवाद लेनिनवाद की महान शक्ति को हटाने में न तो सफल हुयी है और न ही होंगी।

मार्क्सवाद लेनिनवाद वह क्रान्तिकारी विचारधारा है, जो सर्वहारा की चेतना की गहरायी में समा गयी है, और मुक्ति चाहने वाली व्यापक सामूहिक जनता पर ज्यादा से ज्यादा प्रीााव इतना जबरदस्त है कि सरमायदारी सिद्धांतकारों को इसका मुकाबला कना पड़ा है। और वो मार्क्सवाद लेनिनवाद को विकृत करने व क्रान्ति को नष्ट करने के रास्ते व तरीके ढूंढ़ने में अपने प्रयत्न नहीं रोकते हैं।

''तीन दुनियाएं'', श्रेणीबद्ध न होना आदि वर्तमान बे–लेनिनवादी सिद्धांतों का भी उद्देश्य है क्रान्ति को नष्ट करना, साम्राज्यवाद, खास कर अमरीकी साम्रज्यवाद के खिलाफ संघर्ष को मिटाना, मार्क्सवादी लेनिनवादी आन्दोलन व मार्क्स और लेनिन द्वारा सिफरिश की गयी सर्वहारा की एकता में फूट डालना और मार्क्सवाद लेनिनवाद व क्रान्ति की वफादार, सच्ची मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टियों से लड़ने के लिये वे मार्क्सवादी लोगों के विभिन्न दल बनाया।

लेनिन व स्टॅालिन से अगल नये रूप से हालातों की जांच करने और मार्क्सवादी लेनिनवादी कम्युनिस्ट आन्दोलन द्वारा सुरक्षित क्रान्तिकारी नीति को बदलने की कोशिश का नतीजा है गुमराही बेमार्क्सवादी राहों से साम्राज्यवाद व संशोधनवाद के खिलाफ लड़ाई को छोड़ देना। मार्क्सवाद–लेनिनवाद व मार्क्सवादी लेनिनवादी आन्दोलन की क्रान्तिकारी नीति के प्रति बफादारी सभी रंगों के आधुनिक संशोधनवादियों द्वारा फैलाये गये सभी मौकापरस्ती विचलनों के खिलाफ संघर्ष, सरमायदारों व साम्राज्यवाद के खिलाफ मजदूर वर्ग व लोगों के क्रान्तिकारी संचालन और क्रान्ति की गम्भीर तैयारी ही एकमात्र ठीक रास्ता है, और विजय प्राप्त करने का रास्ता है।

उल्लेख सूचना

*इसके सभी उल्लेख नॉमन बेथ्यून इंस्टिट्यूट, टॉरॉन्टो द्वारा 1976 में छापे गये प्रकाशन से हैं।

**यह, व वी. आई. लेनिन के बाकी सारे उल्लेख मॉस्को द्वारा 1960–1970 के बीच, छापे गये 'कलेक्टेड वर्क्स' से हैं।

***यह, व जे. स्टालिन के बाकी सारे उल्लेख मॉस्को द्वारा 1950–1960 के बीच, छापे गये 'वर्क्स' से हैं।